

# बस इंसान

— रविन कुमार

ज़ेहनी जंजीरों से आज़ाद हो पाता,  
काश इंसान बस इंसान हो पाता।

जन्नत और जहन्नूम के पार हो पाता,  
काश इंसान बस इंसान हो पाता।

महफ़िल-ए-ज़िन्दगी में आबाद हो पाता,  
काश इंसान बस इंसान हो पाता।

ढूँढे बिन उसे खुदा, भगवान मिल पाता,  
काश इंसान बस इंसान हो पाता।